चंपक की परीक्षा Champak Stories with Moral Values

चंपक की परीक्षा पास आ रही थी और वह बहुत ही व्यस्त हो गया था। चम्पक पढ़ाई में बहुत अच्छा था। लेकिंग वो कहते है न की बुरी संगति व्यक्ति को बुरा बना देती है, वैसे ही चंपक अपने दोस्त से परीक्षा में चीटिंग करने को सीखा था।

अब पर्चियां बनाना चंपक को बहुत अच्छा लगता था। वह किताबों से महत्वपूर्ण बातों को छोटी-छोटी पर्चियों में छोटे-छोटे अक्षरों में लिख लिया करता था। फिर यही पर्चियों को कंपास में, जूतों में और अपने कपड़ो में छिपाकर परीक्षा देने चला जाता था।

चंपक बहुत बुद्धिमान और पढ़ाई में बहुत अच्छा था। सिर्फ इसलिए कि उसका दोस्त परीक्षा में पर्चियां लाता था और आसानी से पास हो जाता, यह देखकर उसने भी ऐसा करना शुरू कर दिया।

पहली परीक्षा इतिहास की थी। चंपक पर्चियां लेकर अच्छी तरह तैयार था। क्लास टीचर चंपक पर बहुत भरोसा करते थे, यही वजह थी कि चम्पत के लिए परीक्षा में पर्चियां लाना आसान हो गया था।

हिस्ट्री पेपर लिखने के बाद दूसरे दिन गणित का पेपर था। चंपक सब फ़ॉर्मूलास पर्चियों पर लिखने में व्यस्त था। तभी चंपक की माँ उसे खाने के लिए ले आयी। माँ ने जब देखा की वह पर्ची बना रहा है, तो उन्हें बहुत हैरानी हुई।

उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था की चंपक ऐसा कुछ करेगा। पर उन्होंने अपने गुस्से पर काबू कर लिया और कमरे से बाहर चली गयी।

माँ ने पर्चियों के बारे में कुछ नहीं कहा, पर जैसे ही रात को चंपक सो गया, वह चुपके से चंपक के कमरे में आयी और उसने सारी पर्चियां गायब कर दी।

Visit www.hindiseekh.com for more Hindi Stories

सुबह उठकर चंपक ख़ुशी-ख़ुशी स्कूल पहुंचा। उसने इस बार अपनी सारी पर्चियां कंपास बॉक्स में रखी हुई थी। जब शिक्षक ने प्रश्नपत्र वितरित किया, वह बहुत खुश हुआ। वे वही प्रश्न थे, जिनकी वह पर्चियां बना चूका था।

बड़ी ख़ुशी से उसने अपना कंपास बॉक्स खोला तो देखा की सभी पर्चियां गायब थी। चंपक को लगा कि वह पर्चियां कंपास बॉक्स में डालना भूल गया है। वह बहुत डर गया और धीरे-धीरे से रोने लगा। टीचर ने चंपक को देखा और उसके पास उसके पास आकर बोली, "क्या बात है चंपक? पेपर तो बहुत आसान है। हमने बहुत सारे प्रश्न कक्षा में किये है।"

तब जा कर चंपक को आत्मविश्वास आया और बोला, "जी हां मैडम, क्षमा करें, मैं थोड़ा भ्रमित हो गया।" चंपक कोशिश करने लगा, तो कुछ प्रश्नो के हल उसने आराम से कर लिए। अब उसने प्रश्न अपनी मेहनत से हल किये थे, जिससे उसे बहुत ख़ुशी हुई।

घर पहुँचते ही उसके माँ ने उसे पूछा "कैसा हुआ पेपर?" चंपक ने कहा "पेपर अच्छा था। मैं उत्तीर्ण हो जाऊँगा।" और तुरंत अपने कमरे में भाग गया। उसने पर्चियां खोजना शुरू कर दिया। तभी उसकी माँ पीछे आयी और बोली "यह वही है जो आप खोज रहे थे?" चंपक डर गया था कि उसकी माँ अब उसे डांटेगी। लेकिन उसके माँ ने उसे बहुत समझाया।

चंपक को अपनी गलती का एहसास हो गया था। उसे लगा कि वह गलत रास्ते पर चल रहा था। उस दिन से उसने कभी भी पर्चियां नहीं बनाई।

शरारती चंपक Champak Story in Hindi

चंपक बहुत समझदार और बुद्धिमान लड़का था। लेकिन उसके पास एक बुरी चीज थी, उसे कोई भी काम जल्दबाजी में करने की आदत थी। उसकी माँ हमेशा उसे समझाती थी, "बेटा, हर काम आपको धीरे-धीरे और आराम से करना चाहिए, ताकि वह आसानी हो जाये, और ना ही खुद को नुकसान पहुंचे।" लेकिन चंपक कभी किसी की नहीं सुनता था।

New Hindi Quotes https://hindiseekh.com/category/hindi-quotes/

एक दिन सुबह चंपक स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहा था। वह बहुत उत्साहित था, क्योंकि उसकी कक्षा में आज ड्राइंग प्रतियोगिता होने वाली थी। उसने जल्दी से अपना नाश्ता किया, बैग पैक किया और हाथ में जूते लिए बहार कुर्सी पर बैठ गया। तभी उसकी माँ ने कहा, "पहले जूते साफ करो और फिर पहनो।"

लेकिन चंपक कभी किसी के सुझाव को सुनने वाला नहीं था। उसने कहा, "इससे क्या फर्क पड़ेगा माँ। कल ही मैंने इसे पहना था।" चंपक ने लापरवाही से कहते हुए एक जूता पहन लिया। जैसे ही उसने दूसरा पैर अपने जूते में डाला, उसके पैर में कुछ चुभा। उसने जल्दी से अपना पैर बाहर निकाल दिया।

उसके जूतों में कई बड़ी चींटियाँ थीं। वह जोर से चिल्लाया, "मम्मी-मम्मी काट लिया।" जब तक उसकी माँ आयी चंपक का पूरा पैर बड़ी चीटियों से भरा हुआ था। माँ ने उसके शरीर से सभी चींटियों को निकाल दिया।

अब चंपक का एक पैर बुरी तरह से सूज गया था। वह तो बस रो रहा था। उसकी माँ ने चंपक को अस्पताल लेने का फैसला किया।

अस्पताल पहुंचने के बाद डॉक्टर ने कुछ क्रीम लगा दी और उसे दो दिन आराम करने की सलाह दी। यह सुनकर चंपक बहुत नाराज हुआ और अपने कमरे में चला गया। वह सारा दिन घर पर रहकर ड्राइंग प्रतियोगिता के बारे में सोचकर रोने लगा।

दो दिनों के बाद अब उनका पैर ठीक हो गया था। वह स्कूल जाने के लिए तैयारी कर रहा था तभी वह सोचने लगा की अगर माँ की बात मान ली होती तो दर्द न सहना पड़ता। उसे उसकी जल्दबाजी की सजा मिली थी। आज उसने आराम से जूते साफ़ किये और फिर पहने। वह मन ही मन मुस्कुरा रहा था।

चंपक के गांव की सफर Champak Stories with Moral

हर साल की तरह गर्मियों के छुट्टी में चंपक अपने दादा-दादी के घर जाने के लिए तैयार हो गया। चंपक अपने माता-पिता के साथ शहर में रहा करता था। उसके दादा-दादी का घर गांव में था।

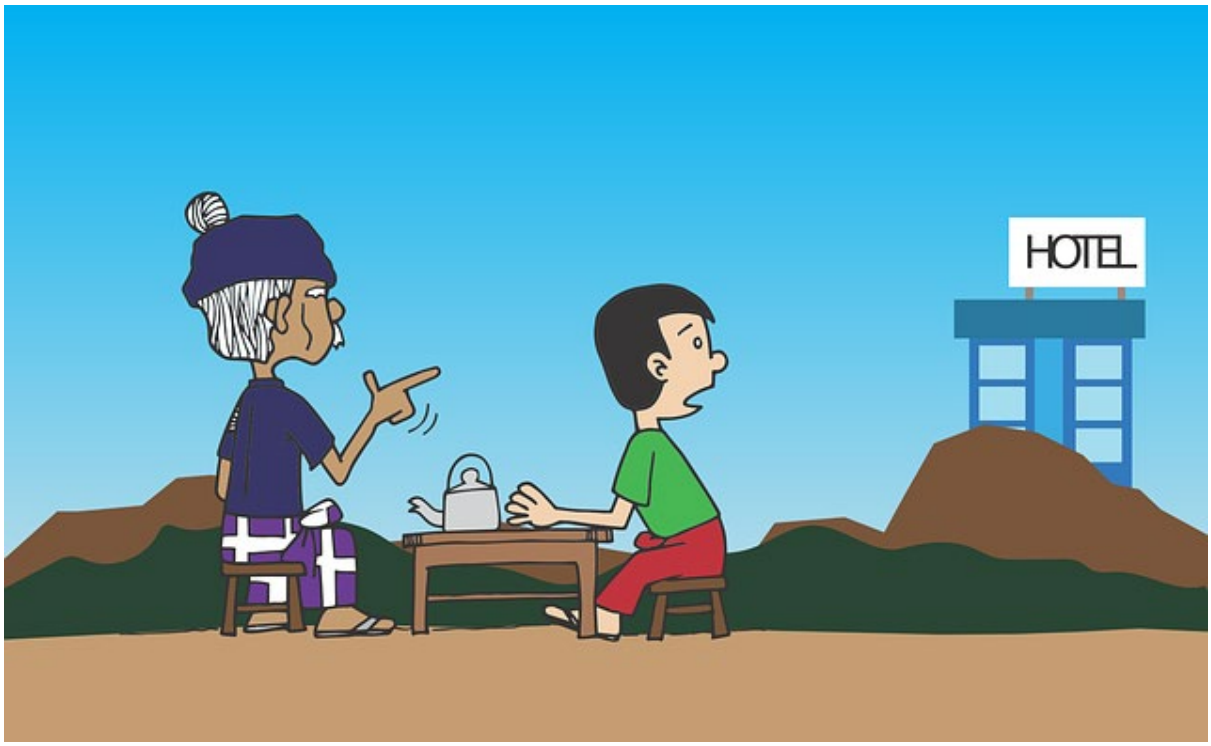

चंपक के माता-पिता को ऑफिस से छुट्टी ना मिलने के कारन चंपक को अकेले ही गांव जाना था। उसके माता-पिता ने उसे रास्ते में खाने के लिए कुछ फल दिए और बस पर बैठा दिया। चंपक को शहर के बजाय गांव में रहने में अच्छा लगता था।

जब चंपक गांव के बस स्टैंड पर पहुंच गया, तो उसने देखा की उसके दादाजी पहले से ही उसका इंतज़ार कर रहे थे। गाँव में पहुँचने पर चम्पक बहुत खुश था।

दादा-दादी के घर उसने खाना खाया और तीनो बात करने बैठे। कुछ देर बाते करने के बाद दादाजी अपने दुकान पर चले गए और चंपक दादाजी की साइकिल लेके गांव में घूमने लगा।

Important Hindi Grammar https://hindiseekh.com/category/hindi-grammar/

अगले दिन जब चंपक उठा, तो उन्होंने एक अजीब चीज देखी। उसके दादाजी बहुत सारी प्लास्टिक की बोतल लेकर फ्रिज में रख रहा है। उनका पूरा फ्रिज पानी की बोतल से भर हुआ था।

"दादाजी इतनी सारी बोतलें फ्रिज में क्यों रख रहे हो?" चंपक ने पूछा। दादाजी ने हस्ते हुए जवाब दिया "तुम्हे थोड़ी देर में पता चलेगा। तुम बस देखते ही रहो।"

कुछ समय बाद एक फल विक्रेता उनके घर आया। दादाजी ने उनसे थोड़े-बहुत फल ख़रीदे और पैसो के साथ फ्रिज में पड़ी एक ठंडी पानी की बोतल दे दी। चंपक ये सब देख रहा था लेकिन उसने कुछ नहीं बोला।

थोड़ी देर के बाद एक मछली वाला उनके घर आ पहुंचा। दादाजी ने फिर से वही किया और उसे ठंडी पानी की बोतल दे दी। कुछ देर सोचने के बाद चंपक ने अपने दादाजी से पानी की बोतलों के बारे में पूछने का फैसला किया।

तब दादाजी बोले "बेटा, यह प्लास्टिक की खली बोतलो को लोग बेकार में कूड़े में फेक देते है। मैं ऐसा करता हूँ तो गर्मी में बेहाल हो रहे लोगो को ठंडा पानी और मेरे मन को शांति मिलती है। अगर सब लोग ऐसा करने लगे, तो लोगो को गर्मी में बहुत राहत मिल सकती है। तुम्हे भी कभी ऐसा करके देखना चाहिए, मेरी मानो बहुत अच्छा लगता है।"

चंपक को लगा दादाजी बिल्कुल ठीक कह रहे है। थोड़ी सी खुशिया बाटने में कोई हर्ज नहीं है। चंपक ने फैसला किया कि वह शहर में अपने घर पहुंचने पर वैसे ही सब की मदद करने की कोशिश करेगा।

मोरल - किसी की मदद करने के लिए केवल पैसो की जरूरत नहीं होती, उस के लिए एक अच्छे मन की जरूरत होती हैं।